उद्यमो भैरवः

Satisar Foundation

नौर्देहेन सती देवी भूमिर्भवति पार्थिव। तस्यां भूमौ सरस्तु विमलोदकम् षड्योजनायतं रम्यं तदर्धेन च विस्तृतम्। सतीदेशमिति ख्यातं देवाक्रीडं मनोहरम्।

The Goddess SATI, with the body in the form of the boat, becomes the earth and on the earth comes into being a lake of clear water, known as SATIDESA....A sporting place of Gods.

कः प्रजापतिरुद्दिष्टः कश्यपश्च प्रजापतिः। तेनेदं निर्मितं देशं कश्मीराख्यं भविष्यति॥

Prajapati is called Ka, Kashyapa is also a Prajapati, Built by him. This place will be called "Kashmir"

◆ नये वर्ष की चावल की थाली पर रखेः

1. धान्यादि Uncooked Rice, 2. पुस्तकम Book, 3. अक्षोटका – अखरोट (Walnut) 4. महीदानै मिलोनदुर . Inkpot/Pen 5. इष्ट देवी (Presiding Godess) 6. पंचांग – जन्त्री (Calander), 7. मुद्रिका रुपये (Rupee/Gold Ring), 8. अन्न–भात् – Cooked Rice / रोटी, 9. लवण– नमक (Salt), 10. वै–वय (Herb), 11. फूल– (Flowers), 12. दधिर– दहि (Curd), 13. कारणान शक्ति सहिंत – लक्ष्मी–विष्णु, शिव–पार्वती, सीता–राम आदि।

◆ यह पर्व श्राद्ध की तरह मनाते है

यक्षेशे (**क्ष्यचमावस**), षट् वक्त्रं (**कुमार षष्टी**), दीप (**दीपावली**), विटकं (**संकट निवारणी चतुर्थी**), शकुनि (**चेत्र प्रतिपदा शुद्धि**) नवरेह लिङ (**शिवचर्तुदशी**), राज्ञीन्ते सीता (**तील् अष्टमी**), गौरी (**यक्षनीचतुर्थी**), सरस्वती मात्रिका (**मौंजहोर ओकदोह**), च पूर्वः तिथि **श्राद्वावत् दर्शनीयां व श्राद्ववत अर्थनीयां।**

यदि उपरलिखित पर्वों की तिथि दिवा हो तो पर्व श्राद्व की भांति पहले दिन ही मनाये जाते है।

◆ कशमीर मत के अनुसार दिन का क्या मान है? (Measure of a day)

उदयात् उदयति भनौ यां तिथि प्रतिपदयते।
सः तिथि सकलागनयंः संक्रातिपि व्रतः दिषो॥

हमारा दिवस एक सूर्य उदय से दूसरे सूर्य उदय तक रहता है जिसको तिथि (ओकदोह, द्वोय..) कहते है इस बीच यदि संक्राति की प्रविष्टि (Enter) हो तो उस सम्पूर्ण काल को ही व्रत धारण करे **(इसमें सुबह, शाम** am or pm **न देखे तथा रात के 12 बजे व्रत खण्डित न करे)**

कई पर्व ऐसे है जिनमे ईष्ट देव को भोग लगाने तक ही व्रत रखना होता है जैसे हररात्रि "हैरत इत्यादि"।

◆ **दो दिन तक तिथि रहने पर क्या करें?**

जब कभी कोई तिथि दो दिन तक रहे ऐसे अवस्था मे पितृकार्य (श्राद्ध) इत्यादि पहले दिन करें और देवकार्य (जन्मदिन) इत्यादि दूसरे दिन करें।

◆ **श्री गणेशस्य संकट चतुर्थी व्रत कृष्णपक्ष चतुर्थ्यॉं चन्द्रोदय व्यापि, चन्द्रोदये भोजनं च।**

श्री गणेश जी की संकट निवारणी चतुर्थी के व्रत मे चंद्र उदय के समय भोजन किया जाता है।

◆ **जन्माष्टमी व्रत (जरम सप्तमी)**

यदा अष्टमी (सप्तम्याः दिने/रात्रै व अर्ध रात्र पर्यन्तं सप्तमी विद्धा) स्यात् तदा पूर्वदिने सप्तम्यमेव कैश्चित्पूर्वभगिभरिदं व्रतम् उपवास लक्षणं विधीयते।

उपवास का समय सप्तमी के दिन व रात दोनों ही कालों मे व्याप्त होता है।

यदापि सप्तमी "प्रविष्ट", अष्टमी "प्रवष्टि" तदापि सप्तमयां अष्टमय अर्धरात्रसत्वे उपवास .....

यदि सप्तमी भी "प्र0" तथा अष्टमी भी "प्र0" हो तो उपवास सप्तमी पर रखा जाता है।

◆ **प्रविष्ट–(पूर) क्या है?**

का अर्थ है प्रविष्ट होना। जब चन्द्र उदय होकर सूर्य के अस्त के समय को पार कर जाता है उस को प्रविष्ट अर्थात (**पूर**) कहते है।

◆ **दिवा–(देवादेव) क्या है?**

दिवादेव का अर्थ है "दिन मे" जब चन्द्र उदय होकर सूर्य से पहले ही अस्त हो जाता है उस को दिवा अर्थात "**दिवादेव**" कहते है। क्योकि चंद्र दिन मे ही अस्त हो जाता है।

◆ **त्रिसृपह क्या है?**

चंद्र उदय होकर जब अगले सूर्य उदय को पार करता है तब वह तिथि दो दिन मनाई जाती है इससे कभी–कभी दो अष्टमियॉं या दो नवमी बन जाती है। **एसे मे पितृ क्रिया पहले तथा देव क्रिया अगले दिन करनी चाहिए।**

◆ **त्रिहः क्या है?**

एक "दिन–रात" मे जब चन्द्र उदय व उस्त हो तथा दोनों समयो पर सूर्य उदय का स्पर्श न हो (Not touching the sun rise) तो समझो एक तिथि का लोप हो गया है। **"रावुन" को ही त्रिहः कहते है।**

◆ **राम नवमी निर्णय**

केवलापि सदोपोष्या नवमी शब्द संग्रहात्।
तस्मात् सर्वात्मना सर्वैः कार्य वै नवमी व्रतम्।।

चंद्रमास की नवमी को श्री रामचन्द्र भगवान् स्वयं प्रकट हुए। वही श्री राम नवमी सूर्य के कोटि ग्रहणों से अधिक पुण्यफल युक्त होती है। इस कारण नवमी यदि कुछ क्षण भी व्याप्त हो तब भी श्री राम का जन्म दिन नवमी ही युक्त संगत है।
दिन द्वये.....वा पूर्वादिने.....अपि त्यक्त्वा परैव कार्याः

◆ **अष्टमी निर्णय**

व्रतमात्रे अष्टमी शुक्लपक्षे परा कृष्णपक्षे पूर्वा

यदिपि अष्टमी किंचिम मात्र भी सूर्य का स्पर्श करे तो व्रत (उपवास) व पूजा के लिये शुक्ल पक्ष मे अगली तिथि ही धारण करें परन्तु कृष्ण पक्ष में इसे पहले दिन ले।

◆ **मासान्त (End of solar month) तब हे जब अगले दिन उसी समय के आस पास "संक्राति" हो (Sun enters into new sign)**

◆ **अमरनाथ यात्रा मे प्रयोग किये हुए वस्तुओं का दान "नवदल तीर्थ" जो कि कशमीर के त्राल प्रान्त मे है श्राद्ध मे किया जाता है तथा इसके बाद ही अमरनाथ यात्रा सम्पूर्ण होती है।**

क्या 10 दिन की क्रिया त्यागने योग्य है?

मृत्यु के बाद शरीर के दाह उपरान्त मनुष्य के "धर्म व कर्म" सूक्ष्म रुप मे (in form of vibrations) घर मे रखे दीपक के चारो तरफ बिना शरीर के घूमते रहते है! इस हेतू जीव की यात्रा शरीर के बगैर नही चलती है इसीलिए एक सूक्ष्म शरीर का निमार्ण किया जाता है जो मनुष्य के सभी "धार्मिक व कार्मिक" संक्लपों को धारण कर सके तथा आगे उनका फल प्राप्त करवा सके इस सूक्षम शरीर के निमार्ण मे 10 दिन लगते है ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार मनुष्य के जन्म मे 10 महीने लगते है।

(जन्म के पहले 10 महीने)	मृत्यु के बाद 10 दिन
1. आकार की प्रक्रिया	1. सिर
2. हाथ, पैर	2. कान, नेत्र, नाक
3. दर्द की इंद्रियां	3. गला, स्कन्ध, योनि, गुदा
4. हडडीयो का निमार्ण	4. हडिडयां, नाभि
5. हृदय, इत्यदि नेत्र	5. जंघा, पैर
6. हृदय, इत्यदि नेत्र	6. सभी मर्मस्थान
7. नाडिया, वीर्य	7. सभी नाडियां
8. शरीर की पूर्ण आकृति	8. दान्त, लोम
9. पूर्ण आकृति	9. वीर्य / रज
10. प्रथम आहार	10. पूर्ण व क्षुदिर्पय
11. स्नान सोंदर	11. क्षुदा शान्त
12. स्नान सोंदर	12. यात्रा

इस कारण इम 10 दिन का शोक मनाते है 11वो दिन इस पिण्ड से निर्मित सूक्षम शरीर को भोजन कराते है व 12 वें दिन अन्नत यात्रा पर भेज देते है।

(Extracts from forth coming Book)

***Let us contact (Social Division)* SATISAR FOUNDATION:**

- When our elders are alone (un-cared) at home.
- When we are not able to face the failures in life.
- When we are not able to know the rituals.
- When we are desperate & need to talk to some one.
- When our children are in need.

<u>You need to know:-</u>

1. What is your Gotra?
2. Who is your Isht Devi?
3. Who is your Isht Bhairav?
4. Who is your Kul Naag?
5. Who is your Kul Devi?
6. What is name of your Grand Father & G. Grand Father (Paternal and Maternal)